INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

महराजगंज जिले में डेयरी व्यवसाय का वर्णानात्मक विश्लेषण

भूपेन्द्र कुमार यादव[1] ,डॉ रमन प्रकाश[2]

[1]शोधार्थी (भूगोल विभाग), भारतीय महाविद्यालय फर्रूखाबाद, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश Email-bk8880665@gmail.com

[2]एसोसिएट प्रोफेसर (भूगोल विभाग), भारतीय महाविद्यालय फर्रूखाबाद, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश

सार

'कृषि' आर्थिक भूगोल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है, जिसमें कृषि कार्यों के साथ पशुपालन जैसी महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया को भी सम्मिलित किया जाता है। व्हिटलसी ने भी पौधों के साथ–साथ पशुओं से उत्पादित वस्तुओं को प्राप्त करने के उदेश्य से किये गये मानवीय प्रयासों को कृषि के अन्तर्गत सम्मिलित किया है। पशुओं से प्राप्त पदार्थ विशेषतः दूध, घी, मक्खन, पनीर आदि पौष्टिकता में धनी होने के साथ मानव जीवन की गुणवत्ता में भी वृद्धि करते हैं, साथ ही पशु–उत्पादित कच्चे माल पर आधारित उद्योगों के विकास का मार्ग प्रसस्त करते हैं। अतः पशुपालन एक महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है, जो क्षेत्रीय विकास में, विशेषतः भारत जैसे कृषि प्रधान राष्ट्र में तो और भी अधिक उपयोगी है। अतः पशुपालन से सम्बन्धित दुग्ध व्यवसाय का अध्ययन किया जाना आवश्यक है।अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महाराजगंज जिले में पशुपालन एवं दुग्ध व्यवसाय की स्थिति का पता लगाना। यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। संबंधित आंकड़े से सन 2007 से 2021–22 के लिए जिला कृषि कार्यालय और जिला सांख्यिकी पुस्तिका से एकत्रित किए गए हैं। उत्तर का विश्लेषण एक्सेल शीट के माध्यम से किया गया है और अध्ययन में पशुपालन की दिशा में होने वाले परिवर्तन को विकास खंडवार विभिन्नता को दिखाने के लिए मानचित्रो का प्रयोग किया जाता है अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन की वर्तमान स्थिति और कृषि व्यवस्था को देखने पर परिलक्षित होता है कि क्षेत्र में पशुपालन एवं कृषि विकास में वृद्धि हो रही है ।

मुख्य शब्द : *डेयरी फार्मिंग, पशुपालन, अर्थिक प्रभाव, क्षेत्रिय विकास।*

प्रस्तावना

भारत में सामान्यतः पशुपालन व्यवसाय कृषि का ही एक महत्वपूर्ण अंग है। कृषि के अन्तर्गत फसलोंत्पादन एवं पशुपालन को सम्मिलित किया जाता है। वॉटसन द्वारा कृषि शब्द से तात्पर्य मृदा संस्कृति की अवधारणा को विस्तृत समझकर विद्वानों ने फसल उगाना तथा पशुपालन दोनों ही क्रियाओं को कृषि के अन्तर्गत सम्मिलित करना उचित समझा है। कृषि प्रधान क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में पशुधन की भूमिका अति महत्वपूर्ण होती है। पशुपालन के अन्तर्गत दुग्ध व्यसाय सबसे प्रमुख आर्थिक क्रिया है। जनपद महाराजगंज में भी कृषि एवं पशुपालन एक प्रमुख आर्थिक क्रिया है। अतः दुग्ध व्यवसाय से पूर्व पशुपालन की स्थिति का विश्लेषण करना आवश्यक है।

जनपद महराजगंज में प्राचीनकाल से ही ग्रामीण अंचलों में पशुपालन व्यवसाय कृषि के पश्चात दूसरी प्रमुख आर्थिक क्रिया रही है। प्राचीनकाल से ही कृषि कार्यों में पशु शक्ति का प्रयोग प्रमुखता से होता रहा है। खेतों की जुताई, फसलों की बुआई. सिंचाई, मढ़ाई, कृषि उत्पादों के परिवहन तथा यात्री परिवहन में पशुओं का ही उपयोग किया जाता रहा है। इसके अतिरिक्त, दूध एवं उसके उत्पादों की प्राप्ति, मांस, चमड़ा ऊन व बाल आदि की प्राप्ति हेतु पशुओं को पाला जाता था। जनपद महराजगंज के तराई क्षेत्र में चारागाहों व वन क्षेत्र की सुविधा के कारण पर्याप्त संख्या में पशुओं को पाला जाता रहा है। कृषकों के अतिरिक्त भूमिहीन

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

श्रमिक भी अपने जीविकोपार्जन के लिए पशुपालन का कार्य करते रहे हैं। जनपद महराजगंज में 19वीं शताब्दी तक पशुओं की संख्या अधिक थी लेकिन वह घटिया नस्ल के थे जिसमें पशु उत्पाद कम मात्रा में प्राप्त होते थे इस समय यहां दुग्ध उत्पादन की अपेक्षा अच्छे नस्ल की बैलों के पशुपालन पर ज्यादा ध्यान दिया जाता था।

वर्तमान परिदृश्य में यहां दुग्ध उत्पादन के लिए भैंस अधिक संख्या में पाली जाती हैं इनका दूध पौष्टिक भारी और चिकना होता है तथा यह इस आर्द्र क्षेत्र के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हैं यहां मुख्य रूप से जफराबादी, भदावरी, एवं मुर्रा आदि नस्ले पाली जाती हैं। चूंकि गाय की अपेक्षा प्रति भैस दुग्ध उत्पादन की मात्रा काफी कम है इसलिए दूध उत्पादकों द्वारा अधिक संख्या में गाय पाली जाती हैं इस क्षेत्र में साहीवाल,हरियाणा, सिंधी और एचएफ गाय पाली जाती हैं। महराजगंज भारत के उत्तर प्रदेश के गोरखपुर संभाग में स्थित एक जिला है जो अपनी जीवंत कृषि गतिविधियों के लिए जाना जाता है महराजगंज डेयरी फार्मिंग के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान के रूप में खुद को स्थापित किया है,जिले की भौगोलिक स्थिति, इसकी अनुकूल जलवायु तथा पर्यावरणीय परिस्थितियां डेयरी फार्मिंग के लिए एक आदर्श वातावरण प्रदान करती हैं इस क्षेत्र को उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु का लाभ मिलता है जिसमें गर्म ग्रीष्म काल, मानसून का मौसम और ठंडी सर्दियां होती हैं जो विशेष रूप से डेयरी फार्मिंग के लिए अनुकूल हैं यह जलवायु परिस्थितियां मवेशियों के पोषण के लिए आवश्यक विभिन्न चारा फसलों के विकास में सहायता करती हैं जिससे महराजगंज क्षेत्र के भीतर दूध उत्पादन के लिए एक महत्वपूर्ण वातावरण बन जाता है। उपजाऊ मिट्टी और गंडक,रोहिन जैसी नदियों के प्रचुर जल संसाधन जिले को कई प्रकार की फसलों की खेती के लिए उपयुक्त बनाते हैं। कृषि यहां की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है यहां की अधिकांश आबादी कृषि कार्यों से जुड़ी हुई है तराई क्षेत्र में फैले हुए इस जिले का अधिकांश भाग मैदानी है जहां धान, गेहूं, गन्ना इत्यादि फैसले उगाई जाती हैं। इसके साथ ही डेयरी फार्मिंग स्थानीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है।जो छोटे और सीमांत किसानों के लिए रोजगार और आय सृजन का माध्यम है।पूरे वर्ष भर हरे चारे की उपलब्धता जिले में मवेशियों के लिए आवश्यक पोषण उपलब्ध कराती है यहां की कृषि व्यवस्था डेरी फार्मिंग उद्योग का समर्थन करती है और यह सुनिश्चित करती है कि महराजगंज में कई परिवारों को आजीविका बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

उद्देश्य

1–वर्तमान परिपेक्ष में दुग्ध व्यवसाय की स्थितियों का पता लगाना।

2–अध्ययन क्षेत्र में दुग्ध उत्पादक पशु प्रजातियों की संख्या में परिवर्तन का अध्ययन ।

3–दुग्ध व्यवसाय द्वारा ग्रामीण पशुपालकों की आय पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण

डेटा स्रोत एवं कार्य प्रणाली–

यह अध्ययन मुख्य रूप से आर्थिक एवं सांख्यिकी प्रभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित महराजगंज जनपद की जिला सांख्यिकी पत्रिका से प्राप्त आंकड़ा स्रोत पर आधारित है वर्तमान परिदृश्य का अध्ययन करने हेतु सन 2007 से 2019 तक के आंकड़े प्रयोग में ले गए हैं। आंकड़ों का अध्ययन करने के लिए उन्हें विकासखण्ड वार वर्गीकृत किया गया है। आंकड़ों को माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल में वर्गीकृत और सारणीबद्ध किया गया है। कार्टोग्राफिक मैपिंग के लिए आर्क जी आई एस 10.5 सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र

उत्तर प्रदेश के 75 जिलों में महराजगंज अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण विशिष्ट स्थान रखता है। इसका अक्षांशीय विस्तार 25° 50′ से 26° 20′ उत्तरी अक्षांश तथा देशांतरीय विस्तार 83°25′ से 84°20′ पूर्वी देशांतर

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 2952 वर्ग कि०मी० है। यह पश्चिम में सिद्धार्थनगर, दक्षिण–पश्चिम में संतकबीर नगर, दक्षिण में गोरखपुर, पूर्व में कुशीनगर, उत्तर–पूर्व में बिहार और उत्तर में नेपाल देश की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से घिरा हुआ है। यह प्रशासनिक रूप से 4 तहसीलों क्रमशः महराजगंज, फरेन्दा, नौतनवाँ और निचलौल में विभाजित है। महराजगंज में 12 ब्लॉक 102 न्याय पंचायतें और 929 ग्राम पंचायतें स्थित है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल आबादी 26,83,292 है। इस क्षेत्र में नगरीकरण मात्र 5.02 प्रतिशत तथा साक्षरता दर 62.76 प्रतिशत है। जिले से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–730 (NH 730) गुजरता है तथा गोरखपुर–नौतनवाँ रेलमार्ग के आनन्दनगर रेलवे स्टेशन के माध्यम से यह जिला रेल मार्ग से भी जुड़ा हुआ है। यह गंगा के मैदान में स्थित तराई भू–भाग है जो धान की कृषि के लिए प्रसिद्ध है यहाँ की उपजाऊ मृदा कृषि एवं पशुपालन के लिए अनुकूल है। इस क्षेत्र का आर्थिक और औद्योगिक विकास बहुत ही कम हुआ है। केन्द्र एवं राज्य सरकार की ओर से संचालित विभिन्न योजनाएँ क्षेत्र के विकास में सहयोग प्रदान कर रही है। ऐसी परिस्थितियों में कृषि के साथ–साथ दुग्ध व्यवसाय क्षेत्र के आर्थिक विकास में एक बड़ी भूमिका निभा सकता है।

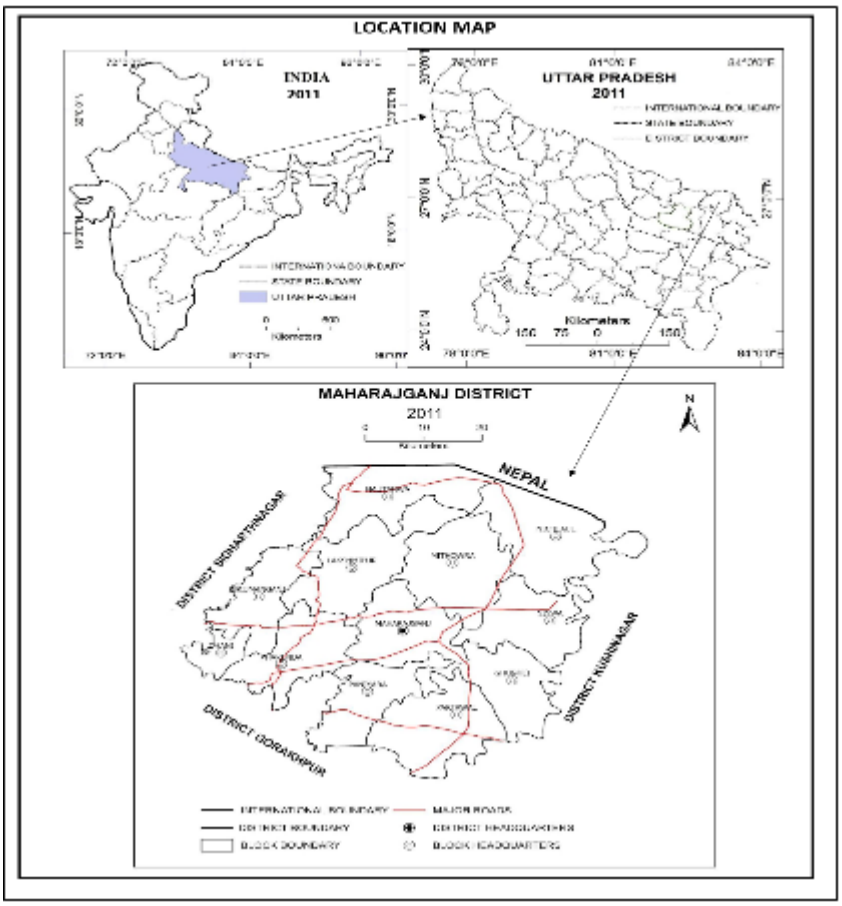

LOCATION MAP OF MAHARAJGANJ DISTRICT

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

स्थानीय अर्थव्यवस्था में डेयरी फार्मिंग का महत्व

महराजगंज जिले में डेरी फार्मिंग कई परिवारों को आजीविका प्रदान करता है तथा यह छोटे और सीमांत किसानों को रोजगार एवं आय सृजन का अवसर उपलब्ध कराता है क्षेत्र के कई परिवार अपनी आय के प्राथमिक स्रोत के रूप में डेरी फार्मिंग पर निर्भर हैं जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को स्थिर करने में मदद करता है डेयरी फार्मिंग गतिविधियों से उत्पन्न आय परिवारों को अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने और बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश करने के लिए सक्षम बनाती है। इसके अतिरिक्त डेयरी फार्मिंग अन्य प्रकार की कृषि की तुलना में आय का एक स्थिर और विश्वसनीय स्रोत प्रदान करती है जो जलवायु परिवर्तन और बाजार के प्रति संवेदनशील हो सकती है डेयरी उद्योग दूध और दुग्ध उत्पादों की आपूर्ति करके स्थानीय आबादी की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है दूध पोषण का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जो बच्चों के संपूर्ण विकास के लिए आवश्यक विटामिन और खनिज प्रदान करता है तथा ताजे डेयरी उत्पादों की स्थानीय उपलब्धता आबादी की आहार संबंधी जरूरत को पूरा करने में मदद करती है और सार्वजनिक स्वास्थ्य का समर्थन करती है इसके अलावा एक शुद्ध डेयरी उद्योग की उपस्थिति पशु चिकित्सा सेवाओं पोषण और डेयरी प्रसंस्करण इकाइयों जैसे संबंधित क्षेत्र के विकास को प्रोत्साहित करती है जिससे महाराजगंज में आर्थिक विकास और रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है अन्य आर्थिक गतिविधियों के साथ डेयरी उद्योग का यह अंतरसंबंध स्थाई और लचीला है तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में इसका अत्यधिक महत्व है

पारंपरिक डेयरी व्यवस्थाएं

महराजगंज में पारंपरिक रूप से डेयरी फार्मिंग में हाथ से दूध निकालना और छोटे पैमाने पर उत्पादन शामिल था। किसान स्थानीय नस्लों के मवेशियों पर निर्भर थे, जिनकी दूध की पैदावार बाद में शुरू की गई जो शंकर नस्लों की तुलना में कम थी (कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण विभाग, 2023)। ये स्थानीय नस्लें क्षेत्रीय जलवायु के अनुकूल थीं और उन्हें न्यूनतम रखरखाव की आवश्यकता थी, लेकिन उनका दूध उत्पादन सीमित था, जो अक्सर किसान के घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए मुश्किल से पर्याप्त था (सिंह, 2023)। हाथ से दूध निकालना आम बात थी, किसान हर सुबह और शाम को अपने हाथों से अपनी गायों का दूध दुहते थे। यह विधि श्रम–गहन होने के बावजूद छोटे पैमाने के किसानों के लिए लागत प्रभावी थी, जो मशीनीकृत दूध देने वाले उपकरण नहीं खरीद सकते थे (एफएओ, 2023)। दूध को आम तौर पर पारंपरिक कंटेनरों में संग्रहित किया जाता था और या तो तुरंत प्रयोग कर लिया जाता था या आस–पास के बाजारों में बेच दिया जाता था। प्रशीतन और आधुनिक भंडारण सुविधाओं की कमी के कारण, दूध को लंबे समय तक संरक्षित रखना चुनौतीपूर्ण था, जिससे उत्पादन के बाद काफी नुकसान होता था (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 2023)। मवेशियों के लिए चारे की प्रथाएँ भी पारंपरिक थीं, जो स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों पर बहुत अधिक निर्भर थीं। किसान अपने मवेशियों को मुख्य रूप से फसल के अवशेष, जैसे कि पुआल और भूसा, और उपलब्ध होने पर हरा चारा खिलाते थे (महराजगंज जिला प्रशासन, 2023)। इस चारे का पोषण मूल्य अक्सर उच्च दूध उत्पादन को बनाए रखने के लिए अपर्याप्त था, जिससे उत्पादन क्षमता और भी सीमित हो गई। पशु चिकित्सा देखभाल न्यूनतम थी, किसान सामान्य मवेशियों की बीमारियों के इलाज के लिए पारंपरिक ज्ञान और उपायों पर निर्भर थे (कुमार, 2023) ।

डेयरी उत्पादों का विपणन मुख्य रूप से स्थानीय था, जिसमें किसान सीधे उपभोक्ताओं को या स्थानीय बाजारों में छोटे विक्रेताओं के माध्यम से दूध बेचते थे। संरचित आपूर्ति श्रृंखला की अनुपस्थिति और सीमित बाजार पहुंच का मतलब था कि किसानों को अक्सर उनके दूध के लिए कम कीमत मिलती थी (शर्मा, 2023)। इसने उनकी डेयरी फार्मिंग प्रथाओं को बेहतर बनाने में निवेश करने की क्षमता को सीमित कर दिया, जिससे कम उत्पादकता और सीमित आय का चक्र जारी रहा। महराजगंज में पारंपरिक डेयरी फार्मिंग प्रथाओं में शारीरिक श्रम, स्थानीय मवेशियों की नस्लों पर निर्भरता, न्यूनतम पशु चिकित्सा देखभाल और

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

सीमित बाजार पहुंच शामिल थी। हालांकि ये प्रथाएं कम लागत वाली, निर्वाह खेती के संदर्भ में टिकाऊ थीं, लेकिन उन्होंने डेयरी क्षेत्र में विकास और लाभप्रदता की संभावना को बाधित किया। आधुनिक डेयरी फार्मिंग तकनीकों में बदलाव और शंकर नस्ल के मवेशियों की शुरूआत ने तब से उद्योग को बदल दिया है, जिससे दूध की पैदावार में वृद्धि हुई है और किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हुआ है (गुप्ता, 2023)।

महाराजगंज में डेरी फार्मिंग का विकास

महराजगंज में डेयरी फार्मिंग पिछले कुछ वर्षों से काफी विकसित हुआ है।शुरुआत में इस क्षेत्र में पारंपरिक तरीकों से छोटे पैमाने पर दुग्ध उत्पादन किया जाता था।जिसमे देसी नस्ल की मवेशियों का पालन और उनका हाथ से दूध निकालने की तकनीकियों पर अधिक निर्भर थे। जिसके परिणाम स्वरूप दूध की उत्पादकता बहुत कम होती थी तथा उत्पादन क्षमता सीमित थी। मुख्य रूप से निर्वाह खेती पर ध्यान केंद्रित था। साथ ही साथ छोटे स्तर पर पशुपालन का कार्य किया जाता था।जिससे उत्पादित अधिकांश दूध परिवारों द्वारा ही उपभोग किया जाता था तथा उनकी पहुंच स्थानीय बाजारों में बहुत कम थी। पिछले कुछ वर्षों में उन्नत नस्लों की संख्या में वृद्धि, आधुनिक तकनिकी और सरकारी सहायता की शुरुआत के साथ दुग्ध उत्पादन की मात्रा में वृद्धि देखी गई है।उत्तर प्रदेश सरकार ने डेयरी फार्मिंग में सुधार के उद्देश्य से विभिन्न योजनाओं को लागू किया।जिससे उच्च उत्पादन देने वाली शंकर नस्ल के मवेशियों की संख्या में वृद्धि हुई। चिकित्सा सेवाएं तथा चारे की उपलब्धता ने पशुपालन व्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन उपायों से दुग्ध उत्पादन और उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।जिससे किसानों को अपने पशुपालन व्यवस्था को विस्तार देने में सहायता मिली तथा उनकी आय एवं रोजगार के अवसर बढ़े।

महराजगंज में डेयरी फार्मिंग के विकास में एक प्रमुख मोड़ डेयरी समितियां की स्थापना थी इन सरकारी समितियां ने दूध के संग्रह, प्रसंस्करण और वितरण की सुव्यवस्था करने तथा यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे उनकी उपज का उचित मूल्य मिले और बिचौलियों का प्रभाव कम हो सके। सरकारी समितियों ने आधुनिक डेयरी फार्मिंग उपकरण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुंच की सुविधा प्रदान की। जिससे किसानों को सर्वोत्तम उपायों को अपनाने और दुग्ध उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिली। महराजगंज में डेयरी फार्मिंग के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिले। स्वचालित दुग्ध निकलने वाली मशीन, कृत्रिम गर्भाधान और बेहतर प्रजनन तकनीक को अपनाने से दूध की पैदावार और गुणवत्ता में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त इंफ्रास्ट्रक्चर में प्रगति ने परिवहन और भंडारण के दौरान दूध की गुणवत्ता को बनाए रखना तथा खराब होने की आशंका को कम करने और बाजार तक पहुंच का विस्तार करने में सक्षम बनाया।

जनपद महराजगंज में पशु सम्पदा के वर्तमान स्वरूप का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि सन 2019 की जनगणना के आधार पर कुल दुग्ध उत्पादन करने वाले पशुओं की संख्या 499929 है जिसमें से 487895 पशु ग्रामीण क्षेत्रों में तथा 12034 पशु नगरीय क्षेत्र में है अर्थात पशु संपदा का 97.59 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में तथा 3.41 प्रतिशत नगरीय क्षेत्र में मिलता है। कुल संपदा में 66470 गोजातीय पशु, 180630 महिवंशीय तथा 252829 बकरे–बकरियाँ है। जो संपदा का क्रमशः 13.29 प्रतिशत, 36.13 प्रतिशत तथा 50.57 प्रतिशत है।

यदि जनपद महराजगंज में विकास खंडवार दुधारू पशुओं का विश्लेषण करें तो यह स्पष्ट होता है कि निचलौल विकासखंड में सर्वाधिक दूध उत्पादक पशु मिलते हैं जिनकी संख्या 58,683 है जो जनपदीय दुग्ध उत्पादक पशुओं की संपदा का 11.73 प्रतिशत है इसके अलावा लक्ष्मीपुर, नौतनवा, बृजमनगंज एवं फरेंदा विकासखण्ड में पशुओं की संख्या अधिक है।

महराजगंज के सभी 12 ब्लॉकों में कृषि के साथ–साथ पशुपालन का विस्तार देखने को मिलता है जिले की नौतनवा और लक्ष्मीपुर विकासखंड में पशु सघनता अधिक देखने को मिलती

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

है जिसमें गोवंश पशुओं की सबसे अधिक मात्रा नौतनवा विकासखंड तथा महिवंशीय पशुओं की सबसे अधिक मात्रा निचलौल विकासखंड में देखने को मिलती है क्षेत्र में क्रॉस ब्रीड गोवंशीय पशुओं की तीव्र वृद्धि देखने को मिल रही है यहां 2007 में क्रॉस ब्रीड गोवंशीय पशुओं की संख्या 14873 थी जो 2019 में बढ़कर 38207 हो गई। इसके अलावा महिवंशीय पशुओं की संख्या में गिरावट देखने को मिल रही है। 2007 में कुल दुग्ध उत्पादन हेतु उपलब्ध भैंसों की संख्या 102665 थी जो 2019 में घटकर 86393 हो गई। जिले में संगठित व्यवसाय के रूप में दूध का उत्पादन किया जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में पशुपालन विभाग के प्रोत्साहन के पश्चात जिले में लगभग 30 डेयरियां प्रतिदिन लगभग 300 लीटर से अधिक दूध का उत्पादन कर रही हैं। इसके साथ ही जिले में लगभग 1300 से अधिक ग्वाले दुग्ध एकत्र करने के साथ ही वितरण का कार्य कर रहे हैं ।

इसके अलावा कुछ छोटे–छोटे पशुपालक दूध उत्पादन कर आसपास के बाजारों और शहरों में बेचने का काम करते हैं धीरे–धीरे जिले में दुग्ध व्यवसाय का व्यवस्थित ढांचा विकसित हो रहा है और यहां दुग्ध आधारित उद्योग के विकास की अपार संभावनाएं हैं।

जनपद महराजगंज में विकास खण्डवार पशुओं की संख्या–2019

विकास खण्ड	गोजातीय	महिषजातीय	बकरी	भेंड़
नौतनवा	5690	14345	21872	250
लक्ष्मीपुर	6919	19373	27968	287
निचलौल	12738	19157	26788	193
मिठौरा	4308	8607	22201	44
सिसवा	5987	8687	21247	176
बृजमनगंज	3319	14752	22272	161
महराजगंज	3722	14697	17743	70
घुघली	4024	15907	31284	133
पनियरा	4977	15546	19965	193
परतावल	4452	16039	21781	89

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

धानी	1657	6933	2431	76
फरेन्दा	6079	22813	11615	187
योगग्रामीण	63872	176856	247167	1859
योगनगरीय	2598	3774	5662	11
योगजनपद	66470	180630	252829	1870

स्रोत सांख्किय पत्रिका–2021–2022

उत्पादित डेयरी उत्पादों के प्रकार

महराजगंज में डेयरी उद्योग दूध, घी, पनीर और दही सहित कई तरह के उत्पाद बनाता है। इन उत्पादों की आपूर्ति स्थानीय बाजारों के साथ–साथ पड़ोसी जिलों में भी की जाती है (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 2023) । दूध प्राथमिक उत्पाद है, जो स्थानीय आबादी के आहार में मुख्य घटक के रूप में कार्य करता है और पोषण का एक महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान करता है। दूध के उत्पादन की प्रक्रिया में गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों को बनाए रखने के लिए सावधानीपूर्वक हैंडलिंग और भंडारण शामिल है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उपभोक्ताओं को ताजा और पौष्टिक दूध मिले (एफएओ, 2023) ।

दूध के अलावा, महराजगंज में डेयरी उद्योग घी का उत्पादन करता है। जिसका व्यापक रूप से खाना पकाने और पारंपरिक चिकित्सा में उपयोग किया जाता है। घी उत्पादन में पानी की मात्रा और दूध के ठोस पदार्थों को हटाने के लिए मक्खन को गर्म करना शामिल है, जिसके परिणामस्वरूप एक समृद्ध स्वाद और उच्च पोषण मूल्य वाला एक स्वस्थिर उत्पाद बनता है (सिंह, 2023)। पनीर, दही वाले दूध से बना एक ताजा पनीर, एक और लोकप्रिय डेयरी उत्पाद है। इसका उपयोग शाकाहारी व्यंजनों में बड़े पैमाने पर किया जाता है और इसकी उच्च प्रोटीन सामग्री और खाना पकाने में बहुमुखी प्रतिभा के लिए इसे महत्व दिया जाता है (कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण विभाग, 2023)।

महराजगंज में दही का उत्पादन भी महत्वपूर्ण है स्थानीय डेयरी फार्म और प्रसंस्करण इकाइयाँ विभिन्न प्रकार के दही का उत्पादन करती हैं, जिसमें सादा, स्वादयुक्त और प्रोबायोटिक किस्में शामिल हैं। दही को एक स्वस्थ नाश्ते के रूप में खाया जाता है, खाना पकाने में इस्तेमाल किया जाता है, और इसके पाचन लाभों के लिए इसकी सराहना की जाती है (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 2023)। डेयरी उत्पादों का विविधीकरण न केवल स्थानीय आबादी की आहार संबंधी प्राथमिकताओं और पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करता है, बल्कि किसानों के लिए अतिरिक्त राजस्व धाराएँ खोलकर डेयरी कृषि की आर्थिक व्यवहार्यता को भी बढ़ाता है (शर्मा, 2023)।

डेयरी उद्योग के प्रमुख कारक

महराजगंज में डेयरी उद्योग में प्रमुख कारको में स्थानीय सहकारी समितियां, निजी डेयरी कंपनियां और व्यक्तिगत किसान शामिल हैं। ये संस्थाएं डेयरी उत्पादों के संग्रह, प्रसंस्करण और वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं (महराजगंज जिला प्रशासन, 2023) स्थानीय सहकारी समितियां छोटे किसानों को संसाधन,

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

प्रशिक्षण और बाजार के अवसर प्रदान करके उनका समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये समितियां कई छोटे डेयरियों दूध एकत्र करने की सुविधा प्रदान करती हैं, जिससे बाजार में निरंतर आपूर्ति और बेहतर विनिमय की शक्ति सुनिश्चित होती है (मिश्रा, 2023)।

निजी डेयरी कंपनियाँ बड़े पैमाने पर काम करती हैं, डेयरी उत्पादों को संसोधित करने और वितरित करने के लिए उन्नत तकनीकों और कुशल उत्पादन विधियों का उपयोग करती हैं। ये कंपनियाँ अक्सर आधुनिक प्रसंस्करण संयंत्रों, कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं और परिवहन नेटवर्क जैसे बुनियादी ढाँचे में निवेश करती हैं, जो उत्पाद की गुणवत्ता बनाए रखने और बाजार तक पहुँच बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं (पटेल, 2023)। डेयरी क्षेत्र में निजी कंपनियों की उपस्थिति पूंजी और विशेषज्ञता लाती है, जो उद्योग के समग्र विकास में योगदान देती है (गुप्ता, 2023)।

व्यक्तिगत किसान भी डेयरी उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ छोटे पैमाने पर कार्य प्रमुख हैं। ये किसान पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं पर निर्भर हैं, फिर भी कई लोग उत्पादकता और लाभप्रदता में सुधार के लिए धीरे–धीरे आधुनिक तकनिकों को अपना रहे हैं (कुमार, 2023)। सहकारी समितियों, निजी कंपनियों और व्यक्तिगत किसानों के बीच सहयोग एक गतिशील और परस्पर जुड़ा हुआ पारिस्थितिकी तंत्र बनाता है जो महराजगंज में डेयरी उद्योग को आगे बढ़ाता है। यह सहयोगी दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि डेयरी उद्योग के लाभ समुदाय के विभिन्न वर्गों में वितरित किए जाते हैं, जिससे आर्थिक स्थिरता और विकास को बढ़ावा मिलता है (शर्मा, 2023)।

आर्थिक प्रभाव

स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान

डेयरी फार्मिंग किसानों के लिए आय का एक स्थिर स्रोत प्रदान करके स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह क्षेत्र महराजगंज की कृषि अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो डेयरी गतिविधियों में लगे कई परिवारों के लिए वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करता है (कुमार, 2023)। डेयरी फार्मिंग से उत्पन्न राजस्व न केवल किसानों का समर्थन करता है, बल्कि इन परिवारों की क्रय शक्ति को बढ़ाकर स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा देता है। डेयरी फार्मिंग का आर्थिक प्रभाव विभिन्न सहायक उद्योगों तक फैला हुआ है, जिसमें चारा उत्पादन, पशु चिकित्सा सेवाएं और डेयरी उपकरण निर्माण शामिल हैं (शर्मा, 2023)। ये संबंधित उद्योग डेयरी क्षेत्र के साथ फलते–फूलते हैं, जिससे एक व्यापक आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र बनता है जो क्षेत्र में निरंतर आर्थिक विकास और विकास का समर्थन करता है (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 2023)।

रोजगार सृजन

डेयरी उद्योग महराजगंज में बड़ी संख्या में लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करता है। इसमें न केवल किसान बल्कि डेयरी उत्पादों के प्रसंस्करण और वितरण में शामिल श्रमिक भी शामिल हैं (शर्मा, 2023)। यह क्षेत्र मैनुअल मजदूरों से लेकर पशु चिकित्सा देखभाल और डेयरी प्रसंस्करण में कुशल पेशेवरों तक विविध कार्यबल को रोजगार देता है। डेयरी सहकारी समितियों और निजी डेयरी कंपनियों की स्थापना ने प्रशासन, रसद और विपणन (एफएओ, 2023) में नौकरियों का सृजन करके रोजगार की संभावनाओं को और बढ़ा दिया है। इसके अतिरिक्त, कुछ कृषि नौकरियों की मौसमी प्रकृति डेयरी फार्मिंग की साल भर की आवश्यकताओं से संचालित होती है, जिससे कई ग्रामीण श्रमिकों के लिए अधिक स्थिर रोजगार परिदृश्य उपलब्ध होता है (कुमार, 2023)।

डेयरी किसानों की आय का स्तर

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

महराजगंज में डेयरी किसानों की आय का स्तर, उनके काम के पैमाने और उनके मवेशियों की उत्पादकता के आधार पर अलग–अलग होता है। बड़े झुंड और बेहतर प्रबंधन प्रथाओं वाले किसान अधिक आय अर्जित करते हैं (विश्व बैंक, 2023)। आधुनिक डेयरी फार्मिंग तकनीकों को अपनाने से, जैसे कि बेहतर प्रजनन पद्धतियाँ, उच्च गुणवत्ता वाला चारा और कुशल दूध देने की प्रक्रियाएँ, कुछ किसानों को अपने दूध की पैदावार और परिणामस्वरूप, उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि करने में सक्षम बनाती हैं (गुप्ता, 2023)। इसके विपरीत, सीमित संसाधनों वाले छोटे पैमाने के किसान अक्सर उच्च उत्पादकता हासिल करने के लिए संघर्ष करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी आय का स्तर कम होता है। सरकारी सब्सिडी और सहायता कार्यक्रम इन किसानों को अपने काम को बढ़ाने और अपनी आजीविका में सुधार करने में मदद करने के लिए वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करके इस अंतर को पाटने का लक्ष्य रखते हैं (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 2023)।

महराजगंज में डेयरी फार्मिंग का समग्र आर्थिक प्रभाव काफी बड़ा है। यह न केवल डेयरी उद्योग में शामिल लोगों की आय और रोजगार में सीधे योगदान देता है, बल्कि सहायक उद्योगों और सेवाओं के समर्थन के माध्यम से व्यापक समुदाय को भी अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुंचाता है। यह बहुआयामी योगदान क्षेत्र के लिए इसके आर्थिक लाभों को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए डेयरी क्षेत्र में निरंतर निवेश और विकास के महत्व को रेखांकित करता है (शर्मा, 2023)।

डेयरी व्यवसाय में चुनौतियाँ

आपूर्ति श्रृंखला मुद्दे

महराजगंज में डेयरी किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक सप्लाई चेन में अक्षमता है। इसमें दूध के परिवहन, भंडारण और प्रसंस्करण इकाइयों तक समय पर डिलीवरी से जुड़ी समस्याएं शामिल हैं (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, 2023)। पर्याप्त कोल्ड चेन इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी का मतलब है कि उत्पादित दूध का एक बड़ा हिस्सा प्रसंस्करण केंद्रों तक पहुँचने से पहले ही खराब हो सकता है, जिससे किसानों को वित्तीय नुकसान हो सकता है (एफएओ, 2023)। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन नेटवर्क अक्सर अविकसित होते हैं, जिससे डेयरियों से बाजारों या प्रसंस्करण इकाइयों तक दूध को तेजी से और कुशलता से पहुँचाना मुश्किल हो जाता है (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 2023)। ये अक्षमताएँ न केवल दूध की गुणवत्ता को कम करती हैं बल्कि किसानों की बाजार पहुँच को भी सीमित करती हैं, जिससे उनकी उच्च आय अर्जित करने की क्षमता में बाधा आती है (सिंह, 2023)।

पशु चिकित्सा सेवाओं तक पहुंच

पशु चिकित्सा सेवाओं तक पहुँच एक और महत्वपूर्ण मुद्दा है। कई किसान अपने मवेशियों के लिए समय पर पशु चिकित्सा देखभाल पाने के लिए संघर्ष करते हैं, जो उनके झुंड के स्वास्थ्य और उत्पादकता को प्रभावित करता है (मिश्रा, 2023)। पशु चिकित्सा पेशेवरों और क्लीनिकों की उपलब्धता सीमित है, खासकर दूरदराज के इलाकों में, जिससे किसानों के लिए स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों का तुरंत समाधान करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है (कुमार, 2023)। पशु चिकित्सा देखभाल तक पहुँच की कमी से मवेशियों में मृत्यु दर बढ़ सकती है, दूध की पैदावार कम हो सकती है और बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ सकती है (उत्तर प्रदेश डेयरी विकास विभाग, 2023)। पशु चिकित्सा सेवाओं और दवाओं की लागत भी छोटे पैमाने के किसानों के लिए वित्तीय बोझ बनती है, जिससे समस्या और बढ़ जाती है (एफएओ, 2023)।

गुणवत्ता नियंत्रण और मानक

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

गुणवत्ता नियंत्रण बनाए रखना और मानकों का पालन करना छोटे पैमाने के डेयरी उत्पादकों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है। यह सुनिश्चित करना कि दूध आवश्यक सुरक्षा और गुणवत्ता मानकों को पूरा करता है, बाजार में स्वीकार्यता के लिए आवश्यक है (सिंह, 2023)। छोटे पैमाने के किसानों के पास अक्सर प्रभावी गुणवत्ता नियंत्रण उपायों को लागू करने के लिए आवश्यक उपकरण और ज्ञान की कमी होती है (नारायण,2023)। इसके परिणाम स्वरूप दूध दूषित और खराब हो सकता है, जिससे उनके दूध और डेयरी उत्पादों की बाजार क्षमता कम हो सकती है (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 2023)। इसके अतिरिक्त, डेयरी फार्मिंग में स्वच्छता और सफाई के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं पर अक्सर जागरूकता और प्रशिक्षण की कमी होती है, जो उच्च गुणवत्ता मानकों को बनाए रखने के प्रयासों को और जटिल बनाता है (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, 2023)।

बाजार प्रतिस्पर्धा

महराजगंज में डेयरी उद्योग को बडी डेयरी कंपनियों और आयातित डेयरी उत्पादों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड रहा है। यह प्रतिस्पर्धा कीमतों को कम कर सकती है और स्थानीय किसानों के लिए लाभ मार्जिन को कम कर सकती है (नारायण, 2023)। बड़ी डेयरी कंपनियों को बड़ी अर्थव्यवस्थाओं, उन्नत तकनिकों और व्यापक वितरण नेटवर्क से लाभ होता है, जिससे उन्हें कम कीमतों पर और अधिक सुसंगत गुणवत्ता के साथ उत्पाद पेश करने की अनुमति मिलती है (शर्मा, 2023)। आयातित डेयरी उत्पाद, जिन्हें अक्सर उनके मूल देशों द्वारा सब्सिडी दी जाती है, सस्ते विकल्पों के साथ बाजार में उपलब्ध कराकर बड़ा खतरा भी पैदा करते हैं (एफएओ, 2023)। यह तीव्र प्रतिस्पर्धा स्थानीय पशुपालकों पर अपनी कीमतें कम करने का दबाव डालती है, जिससे अस्थिर कृषि पद्धतियाँ और वित्तीय अस्थिरता हो सकती है (मिश्रा, 2023)। प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए, स्थानीय पशुपालकों को अपनी उत्पादन प्रक्रियाओं, विपणन रणनीतियों और बाजारों तक पहुँच में सुधार करने में सहायता की आवश्यकता होती है (सिंह, 2023)।

महराजगंज में डेयरी व्यवसाय के सामने आने वाली चुनौतियाँ बहुआयामी हैं और उद्योग की स्थिरता और विकास सुनिश्चित करने के लिए बुनियादी ढाँचे के विकास, पशु चिकित्सा सेवाओं तक पहुँच, गुणवत्ता नियंत्रण उपायों और बाजार समर्थन को शामिल करते हुए समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता है (गुप्ता, 2023)। डेयरी किसानों की आजीविका बढ़ाने और क्षेत्र में डेयरी व्यवसाय के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए इन मुद्दों का समाधान करना महत्वपूर्ण है (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 2023) 1

सरकारी नीतियाँ और पहल

प्रासंगिक सरकारी योजनाओं का अवलोकन

उत्तर प्रदेश सरकार ने डेयरी फार्मिंग को समर्थन देने के लिए कई योजनाएं लागू की हैं, जिनमें मवेशियों की खरीद, चारा और पशु चिकित्सा देखभाल के लिए सब्सिडी शामिल है। इन पहलों का उद्देश्य डेयरी व्यवसाय की उत्पादकता और लाभप्रदता को बढ़ाना है (पटेल, 2023)। प्रमुख कार्यक्रमों में से एक किसानों को उच्च उपज देने वाले संकर नस्ल के मवेशियों की खरीद के लिए वित्तीय सहायता का प्रावधान है, जो देशी नस्लों की तुलना में अधिक उत्पादक हैं (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 2023)। इसके अतिरिक्त, सरकार मवेशियों के चारे और चारे के लिए सब्सिडी प्रदान करती है, जिससे किसानों की परिचालन लागत कम होती है और यह सुनिश्चित होता है कि उनके पशुओं को पर्याप्त पोषण मिले (उत्तर प्रदेश डेयरी विकास विभाग, 2023)। पशु चिकित्सा देखभाल योजनाएं मुफ्त या सब्सिडी वाली पशु चिकित्सा सेवाएं, टीकाकरण और दवाएं प्रदान करती हैं, जो डेयरी मवेशियों के स्वास्थ्य और उत्पादकता को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं (कुमार, 2023)।

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

बुनियादी ढांचे का विकास एक और मुख्य क्षेत्र है, जिसमें सरकार दूध संग्रह केंद्रों. कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं और डेयरी प्रसंस्करण इकाइयों के निर्माण में निवेश कर रही है (एफएओ, 2023)। ये सुविधाएं फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने में मदद करती हैं और यह सुनिश्चित करती हैं कि किसान अपने दूध को प्रभावी ढंग से संग्रहीत और संसाधित कर सकें। किसानों को आधुनिक डेयरी फार्मिंग तकनीकों, गुणवत्ता नियंत्रण और व्यवसाय प्रबंधन के बारे में शिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं (सिंह, 2023)। इन योजनाओं की व्यापक प्रकृति डेयरी क्षेत्र को मजबूत करने और डेयरी किसानों की आजीविका में सुधार करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है (पटेल, 2023)।

डेयरी फार्मिंग पर नीतियों का प्रभाव

महराजगंज में डेयरी फार्मिंग पर सरकारी नीतियों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। सब्सिडी और सहायता कार्यक्रमों ने किसानों को अपने काम को बेहतर बनाने और अपनी आय बढ़ाने में मदद की है (गुप्ता, 2023)। उच्च उपज देने वाले मवेशियों और बेहतर गुणवत्ता वाले चारे की शुरूआत ने दुग्ध उत्पादन में वृद्धि की है, जिससे किसानों को अधिक राजस्व प्राप्त करने में मदद मिली है (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 2023)। सस्ती पशु चिकित्सा देखभाल तक पहुँच ने मवेशियों के समग्र स्वास्थ्य में सुधार किया है, जिससे मृत्यु दर में कमी आई है और उत्पादकता में वृद्धि हुई है (उत्तर प्रदेश डेयरी विकास विभाग, 2023)। ये स्वास्थ्य सुधार अधिक सुसंगत दूध उत्पादन और उच्च गुणवत्ता वाले डेयरी उत्पादों में तब्दील हो जाते हैं (मिश्रा, 2023) ।

दूध संग्रह केंद्रों और कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं जैसे बुनियादी ढांचे के निवेश ने आपूर्ति श्रृंखला को सुव्यवस्थित किया है, जिससे दूध खराब होने की संभावना कम हुई है और यह सुनिश्चित हुआ है कि किसान अपने दूध को बेहतर कीमतों पर बेच सकें (एफएओ, 2023)। डेयरी प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना ने घी, पनीर और दही जैसे मूल्यवर्धित उत्पादों के लिए नए बाजार खोले हैं, जिससे किसानों के लिए आय के स्रोतों में विविधता आई है (सिंह, 2023)। प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने किसानों को आधुनिक डेयरी फार्मिंग प्रथाओं को अपनाने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से परिपूर्ण किया है। जिसके परिणामस्वरूप बेहतर फार्म प्रबंधन और दक्षता मे वृद्धि हुई है (कुमार, 2023)।

कुल मिलाकर, सरकार की पहलों ने महराजगंज में डेयरी फार्मिंग के लिए अधिक सहायक वातावरण बनाया है, जिससे इस क्षेत्र में वृद्धि और विकास को बढ़ावा मिला है। इन नीतियों का सकारात्मक प्रभाव डेयरी किसानों की बेहतर आर्थिक स्थिरता, डेयरी उत्पादों की बढ़ी हुई गुणवत्ता और स्थानीय डेयरी उद्योग की बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धात्मकता (गुप्ता, 2023) में स्पष्ट है। महाराजगंज में डेयरी क्षेत्र की प्रगति को बनाए रखने और दीर्घकालिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए निरंतर सरकारी समर्थन और इन कार्यक्रमों का विस्तार आवश्यक होगा (पटेल, 2023)

भविष्य की संभावनाएं

महराजगंज की अर्थव्यवस्था में दुग्ध उत्पादन का महत्वपूर्ण स्थान है इससे सीधे–सीधे हजारो लोगों को आजीविका प्राप्त होती है और श्वेत क्रांति ने और अधिक संभावनाएं बढ़ा रखी हैं। स्वचालित दुग्ध निकलने वाली मशीनों ,बेहतर प्रजनन पद्धतियों और उन्नत तकनीक को अपनाकर दुग्ध उत्पादन बढ़ाया जा सकता है इसके कुछ विकल्प निम्नवत हैं :–

1– डेयरी उद्योग क्षेत्र में विभिन्न नवीन तकनीकों के माध्यम से दुग्ध उत्पादन की क्षमता को बढ़ाकर भविष्य में रोजगार के अवसरों में वृद्धि की जा सकती है

2– आधार ग्राम योजना, मिनी डेयरी योजना, महिला डेयरी योजना एवं पशुशाला निर्माण योजनाओं को संचालित कर पशुपालन एवं प्रबंधन क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

3–क्षेत्र में निर्धन एवं आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों के पास पशुओं को बांधने के लिए उचित आश्रय स्थल उपलब्ध नहीं है जिनका विकास का पिछड़े क्षेत्रों में दुग्ध व्यवसाय में वृद्धि की जा सकती है।

4– दुग्ध विपणन की प्रक्रिया को सरल बनाकर अधिकाधिक लोगों को जोड़कर दुग्ध व्यवसाय का विस्तार किया जा सकता है।

5– दुग्ध व्यवसाय को उद्योग का दर्जा प्रदान कर उसके भविष्य की बाधाओं पर अंकुश लगाया जा सकता है केंद्रीय व राज्य सरकारों द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं को क्रियान्वित कर दूध की मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन स्थापित किया जा सकता है।

6– ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षित बेरोजगार युवाओं को पशु चिकित्सा से संबंधित प्रशिक्षण देकर पशुपालन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं।

7– ग्रामीण क्षेत्रों में दुग्ध उत्पाद को संरक्षित करने के लिए शीट टैंकरों इत्यादि की व्यवस्था कर दूध से बने उत्पादों को अधिक समय तक रखा जाए जिससे पशुपालक उन उत्पादों को उचित मूल्य पर बेच सके।

8– अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डेयरी व्यवसाय के क्षेत्र में किए जाने वाले विभिन्न नवाचारों को अपनाकर दूध व्यवसाय में पशुपालन को संगठित कर इसे अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र महराजगंज में डेयरी व्यवसाय का विस्तृत विश्लेषण प्रदान किया है। जिसमें इसकी वर्तमान स्थिति, आर्थिक प्रभाव, चुनौतियां और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है। डेयरी उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो कई परिवारों को आए और रोजगार का अवसर प्रदान करता है (शर्मा, 2023)। आपूर्ति श्रृंखला की अक्षमताओं पशु चिकित्सा सेवाओं तक सीमित पहुंच गुणवत्ता नियंत्रण के मुद्दों और बाजार प्रतिस्पर्धा जैसी महत्वपूर्ण चुनौतियां का सामना करने के बावजूद पर्याप्त सरकारी समर्थन और आधुनिक कृषि प्रथाओं को अपनाने के कारण यह क्षेत्र निरंतर विकास कर रहा है। सरकारी नीतियों ने महराजगंज में डेयरी फार्मिंग को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है सब्सिडी एवं सहायता कार्यक्रमों से किसानों को अपने रोजगार और आय के अवसर बढ़ाने में मदद मिली है(उत्तर प्रदेश डेयरी विकास विभाग 2023) सहकारी नीतियों की स्थापना और निजी डेयरी कंपनियों की भागीदारी ने उद्योग की दक्षता और लाभप्रदता को और बढ़ाया है (मिश्रा, 2023, पटेल, 2023) भविष्य पर गौर करें तो महराजगंज में डेयरी उद्योग में वृद्धि और विकास की काफी संभावनाएं हैं जो उन्नत तकनीक और बेहतर प्रजनन सुविधाओं जैसे तकनीक से प्रेरित है (जिला पशु चिकित्सा कार्यालय, महराजगंज, 2023)।पशुपालन की स्थिति का अध्ययन करने के लिए सन 2007 से सन 2019 तक के आंकड़े प्रयोग किए गए हैं। इन आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि पिछले कुछ वर्षों में पशुपालन के प्रतिरूप में बदलाव देखने को मिला है। दूध की भारी मांग के कारण उच्च उत्पादकता वाले गोवंशियों के संख्या में वृद्धि हुई है जबकि मैं महिवंशीय पशुओं की संख्या में कमी आई है। यह स्थिति यह प्रदर्शित करने का कार्य करती है कि क्षेत्र में दूध की भारी मांग है जिसके लिए पशुपालक प्रयत्नशील हैं और उच्च गुणवत्ता वाले पशुओं का पालन कर रहे हैं।

निरंतर विकास के लिए बुनियादी ढांचे में लगातार निवेश, बेहतर बाजार पहुंच और सरकारी समर्थन आवश्यक हैं(शर्मा, 2023) पशु चिकित्सा सेवाओं को बढ़ाने आपूर्ति श्रृंखला के बुनियादी ढांचे में सुधार और डेयरी व्यवसाय में प्रशिक्षण प्रदान करने और डेयरी प्रसंस्करण सुविधाओं में निवेश बढ़ने से उद्योग को और आगे बढ़ाया जा सकता है(शर्मा, 2023)। यह व्यापक विश्लेषण नीति निर्माता किसने और निवेशकों सहित हिट धारकों के लिए एक मूल्यवान संसाधन के रूप में कार्य करता है।

सन्दर्भ

1–शेखावत, उधम सिंह.(2022).परिचयात्मक पशुपालन प्रसार. साक्षी पब्लिकेशन, जयपुर।

2–कुमार, संजय. (2010). आधुनिक पशुपालन, दया पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

3–कुमार, संजय. सिंह, सतवीर. (2019). डेयरी पशु प्रबन्धन,प्वाइण्टर पब्लिकेशन।

4–दांगी, अशोक. (2019). पशुपोषण, डेयरी रसायन एवं दुग्ध विज्ञान, हार्दिया पब्लिकेशन जयपुर।

5–भारत सरकार. (2023). पशुपालन पर वार्षिक रिपोर्ट, https://dahd.nic.in

6–उत्तर प्रदेश डेयरी विकास बोर्ड. (2023). राज्य डेयरी नीति. https://up.gov.in

7–राष्ट्रिय डेयरी विकास बोर्ड. (2023) डेयरी सांख्यिकी https://nddb.coop/dairystatistics

8–सिंह, आर. (2023), उत्तर प्रदेश में डेयरी फार्मिंग का आर्थिक प्रभाव, जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स।

9–कुमार, पी. (2023). पशुचिकित्सा सेवाएँ एवं डेयरी उत्पादकता, भरतीय पशुचिकित्सा जर्नल।

10–शर्मा, एस. (2023) पूर्वी उत्तर प्रदेश में डेयरी उत्पादों की बाजार गतिशीलता, बिजनेस स्टैण्डर्ड।

11–नारायण, के. (2023) डेयरी उत्पादों में गुणवत्ता मानक, खाद्य सुरक्षा पत्रिका।

12–पटेल, आर. (2023) डेयरी फार्मिंग पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव, जर्नल ऑफ डेयरी साईंस।